Devatasarvabhaumaproktam Shiva Stuti

देवतासार्वभौमप्रोक्तं शिवस्तुतिः

Document Information

Text title : Devatasarvabhaumaproktam Shiva Stuti

File name : devatAsArvabhaumaproktaMshivastutiH.itx

Category : shiva, shivarahasya, stuti

Location : doc_shiva

Proofread by : Ruma Dewan

Description/comments : shrIshivarahasyam | ugrAkhyaH saptamAMshaH | adhyAyaH 27 madhyArjunamahimAnuvarNanam | ?160-?170||

Latest update : June 16, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

June 16, 2024

sanskritdocuments.org

देवतासार्वभौमप्रोक्तं शिवस्तुतिः

(शिवरहस्यान्तर्गते उग्राख्ये)
देवतासार्वभौम -
भक्तार्तिभञ्जन करुणाकर शङ्करेश
शम्भो महेश भवभर्ग पिनाकपाणे ।
संसारसागरमसारमघोरमाप्तं
मामुद्धर त्रिपुरसूदन मन्मथारे ॥ १/?१६०॥

गौरीपते पुरहरामित पुण्यमूर्ते
हे मुक्तिदायक यमान्तक विश्वमूर्ते ।
संसारसागरमसारमघोरमाप्तं
मामुद्धर त्रिपुरसूदन मन्मथारे ॥ २/?१६१॥

विश्वाधिकाव्यय विशुद्धगुण स्वभाव
निर्द्वन्द्व नित्य निरुपाधिक निर्विकार ।
संसारसागरमसारमघोरमाप्तं
मामुद्धर त्रिपुरसूदन मन्मथारे ॥ ३/?१६२॥

सोम त्रिणेत्र हरिनेत्र समर्चिताङ्घ्रे
ब्रह्मेन्द्र मुख्य सुरवन्दित पादपद्म ।
संसारसागरमसारमघोरमाप्तं
मामुद्धर त्रिपुरसूदन मन्मथारे ॥ ४/?१६३॥

निर्लिप्त पालय सुरासुर सर्गवर्ग-
सृष्टिस्थितिप्रलयकारण सर्वरूप ।
संसारसागरमसारमघोरमाप्तं
मामुद्धर त्रिपुरसूदन मन्मथारे ॥ ५/?१६४॥

शार्दूलचर्मपरिवीत सुरासुरेश
कर्पूरगौर करुणाकर चन्द्रमौले ।

संसारसागरमसारमघोरमाप्तं
मामुद्धर त्रिपुरसूदन मन्मथारे ॥ ६/?१६५॥

बिल्वार्चनप्रिय विभूति विभूषिताङ्ग
निःसङ्ग निर्गुण निरञ्जन निर्विकार ।
संसारसागरमसारमघोरमाप्तं
मामुद्धर त्रिपुरसूदन मन्मथारे ॥ ७/?१६६॥

योगीन्द्र मानससरोरुह सन्निविष्ट
श्रेष्ठेष्टदायक निनिष्टजनेष्ट शूलिन् ।
संसारसागरमसारमघोरमाप्तं
मामुद्धर त्रिपुरसूदन मन्मथारे ॥ ८/?१६७॥

शान्तान्तकान्तक मुमुक्षुजनाभिसेव्य
शैलाधिराजतनयायुतवामभाग ।
संसारसागरमसारमघोरमाप्तं
मामुद्धर त्रिपुरसूदन मन्मथारे ॥ ९/?१६८॥

कल्याणरूप कनकाचलचारुचाप
विज्ञानरूप दुरवाप विहस्त पाप ।
संसारसागरमसारमघोरमाप्तं
मामुद्धर त्रिपुरसूदन मन्मथारे ॥ १०/?१६९॥

वेदान्तवेद्यविभवाव्यय शुद्ध वृत्ते
वृत्तिप्रदाभयद दक्षदयासमुद्र ।
संसार सागरं असारं अघोरमाप्तं
मामुद्धर त्रिपुरसूदन मन्मथारे ॥ ११/?१७०॥

॥ इति शिवरहस्यान्तर्गते देवतासार्वभौमप्रोक्तं शिवस्तुतिः सम्पूर्णा ॥

- ॥ श्रीशिवरहस्यम् । उग्राख्यः सप्तमांशः । अध्यायः २७ मध्यार्जुनमहिमानुवर्णनम् । ?१६०-?१७० ॥

- .. shrIshivarahasyam . ugrAkhyaH saptamAMshaH . adhyAyaH 27 madhyArjunamahimAnuvarNan . ?160-?170..

Notes:

Śloka numbers in the source text have duplication from 160-163 with many of them missing the numbering. The Śloka-s in this Stuti are hence marked as /?, and renumbering from 1-11 has also been done for readers' reference.

Proofread by Ruma Dewan

Devatasarvabhaumaproktam Shiva Stuti
pdf was typeset on June 16, 2024

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*